Mobile: 9983140780
Email: ashok.drmr@gmail.com

भा.कृ.अनु.प.–सरसों अनुसंधान निदेशालय

सेवर, भरतपुर (राजस्थान) 321 303

डॉ. अशोक कुमार शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक एवं जनसम्पर्क अधिकारी

प्रेस विज्ञप्ति

दिनांकः 5.08.2022

देश की विभिन्न जलवायु परिस्थितयों के लिए राई–सरसों की आठ नई उन्नत किस्मे विकसित

बदलते परिवेश में अधिक उत्पादन के लिये किसानों को जागरूक करने की आवश्यकता

सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर के नेतृत्व में अखिल भारतीय राई–सरसों परियोजना के अर्न्तगत देश में कार्यरत विभिन्न केन्द्रों द्वारा विकसित राई–सरसों की आठ उन्नत किस्मों को राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा में 1–3 अगस्त 2022 को आयोजित अखिल भारतीय राई–सरसों अनुसंधान परियोजना की 29 वीं वार्षिक संगोष्ठी में देश कि विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के लिए अनुशंसित किया गया है।

उत्तरी राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, एवं जम्मू में समय से बुवाई हेतु आर. एच.– 1424, गुणवत्ता युक्त आर. एच. (ओई)–1706 एवं पी. एम 34, लवणीय एवं क्षारीय क्षेत्र के लिए सी. एस. 2005–143 को संगोष्ठी में अनुशंसित किया गया। इसके अतिरिक्त सफेद रोली प्रतिरोधी तीन राई की किस्मों रोहिणी (ए4ए5)–491, पूसा बोल्ड (ए4ए5)–842, वरूणा (ए4ए5)–936–279, तथा गोभी सरसों की एक किस्म ऐ.के.जी.एस.–19–8 को चिन्हित किया गया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. संजीव कुमार गुप्ता इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि थे एवं श्री कर्ण नरेन्दग कृषि विश्वविधालय, जोबनेर के कुलपति डॉ. जे. एस. सन्धू ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डॉ. संजीव कुमार गुप्ता ने कहा कि फसल सुधार, सही प्रबंधन, सिंचाई सुविधाओं एवं अच्छे समर्थन मूल्यों से ही देश में तिलहन उत्पादन को बढाया जा सकता है । उन्होंने कहा है कि कृषि वैज्ञानिक गुणवत्तायुक्त संकर किस्मों को विकसित करें। पोषण की गुणवत्ता को बढावा दें । साथ ही किसानों के पुराने विचार को बदलें और बदलते परिवेश में अधिक उत्पादन के लिये उन्हें जागरूक व प्रोत्साहित करने की जरूरत है। आर्थिक सृदृढता के लिये किसानों को राई–सरसों की खेती को बढावा देने की जरूरत है।

इस अवसर पर डॉ. जे. एस. सन्धू ने कहा कि विभिन्न परिस्थितियों के लिये अलग–अलग तकनीकों का विकास करना चाहिये और नवीन अनुसंधानों को किसानों तक समय पर पहुंचाया जाना चाहिए ।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी. के राय ने तोरिया, राई एवं सरसों फसल की अखिल भारतीय परियोजना की 2021–22 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. राय ने संगोष्ठी में जानकारी दी कि गत वर्ष देश भर में 36 केन्द्रों द्वारा 16 राज्यों के 85 जिलों में 2534 प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। बैठक में विभिन्न राज्यों के लिए वहाँ की जलवायु, भूमि, संसाधन आदि स्थितियों को ध्यान में रखते हुऐ राई–सरसों के उत्पादन को बढाने की कार्ययोजना तैयार करने का निर्णय लिया गया। इस संगोष्ठी में प्रजनक बीज उत्पादन, तकनीकी हस्तांतरण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं किस्मों को चिन्हित किये जाने के साथ मुख्य शोध बिन्दुओं पर क्रमवार चर्चा हुई इसमें राई–सरसों के रोग एवं उनकी रोकथाम, राई में संकर किस्मों का उत्पादन, गुणवत्ता सुधार, परम्परागत तकनीकि सुधार, आदि पर गहन विचार विमर्श हुआ।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के छः प्रकाशनों का भी अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

देश के विभिन्न राज्यो से आये लगभग 130 वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। इस संगोष्ठी का संचालन श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविधालय, जोबनेर के अनुसंधान निदेशक डॉ. एम. एल. जाखड ने किया।

(अशोक कुमार शर्मा)

AGM OF AICRP - RM WORKERS
Organized by
Dr. P. K. Rai
Dr. Sanjeev Gupta

राई-सरसों की 8 उन्नत किस्में विकसित हर तरह की जलवायु में देंगी अच्छी उपज

भास्कर संवाददाता | भरतपुर

सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर के नेतृत्व में अखिल भारतीय राई-सरसों परियोजना के अन्तर्गत देश में कार्यरत विभिन्न केन्द्रों द्वारा विकसित राई-सरसों की आठ उन्नत किस्मों को राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा में आयोजित अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 29 वीं वार्षिक संगोष्ठी में देश कि विभिन्न जलवायु परिस्थतियों के लिए अनुशंसित किया गया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. संजीव कुमार गुप्ता इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि थे। श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विष्वविधालय, जोबनेर के कुलपति डॉ. जे. एस. संधू ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डॉ. संजीव कुमार गुप्ता ने कहा कि फसल सुधार, सही प्रबंधन, सिंचाई सुविधाओं एवं अच्छे समर्थन मूल्यों से ही देश में तिलहन उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। डॉ. जे. एस. संधू ने कहा कि

भरतपुर. सरसों अनुसंधान निदेशालय की पुस्तिका का विमोचन करते हुए।

विभिन्न परिस्थितियों के लिये अलग-अलग तकनीकों का विकास करना चाहिये और नवीन अनुसंधानों को किसानों तक समय पर पहुंचाया जाना चाहिए। सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी. के राय ने तोरिया, राई एवं सरसों फसल की अखिल भारतीय परियोजना की 2021-22 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के छः प्रकाशनों का भी अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।